2 इश्तेहार

नगर पालिका का इश्तेहार

सूचना

जबकि, कुछ बद्दिमाग लोग इस शहर में जगह-जगह मिलते हैं। और उत्तेजक भाषा का उपयोग करते हैं। प्रजा को महामहिम रानी साहिबा के प्रति भड़का रहे हैं।

इस इश्तेहार के द्वारा सूचित किया जा रहा है कि इस शहर की सीमाओं में भविष्य में ऐसी उथल-पुथलकारी सभाओं को होने नहीं दिया जाएगा।

जान कैफ
महापौर
नगर पालिका के नाम से (जुलाई 1839)

ईश्वर रानी साहिबा को सलामत रखे।*

*इंग्लैण्ड का राष्ट्रगीत

बात आज से लगभग 170 साल पहले की है। उन दिनों इंग्लैण्ड के मज़दूरों का एक महत्वपूर्ण आन्दोलन चल रहा था। अत्यन्त गरीबी और अत्याचार का विरोध करते-करते काफी समय बीत चुका था। अब उन्हें यह लगने लगा कि संसद में पहुँचकर उन्हें अपने हितों को ध्यान में रखकर कानून बनाने होंगे। लेकिन उन दिनों अमीर ही संसद के चुनाव में वोट दे सकते थे। मज़दूरों ने एक माँगपत्र या चार्टर बनाया जिसमें इंग्लैण्ड के हर पुरुष को वोट देने का अधिकार माँगा गया था। (तुमने शायद ध्यान दिया होगा कि वे सिर्फ पुरुषों को वोट देने के अधिकार की माँग कर रहे थे। उन दिनों महिलाओं के लिए वोट के अधिकार के बारे में आन्दोलन शुरू नहीं हुआ था।) इस चार्टर के समर्थन में जगह-जगह सभाएँ होने लगीं व जुलूस निकाले जाने लगे। इसे चार्टर आन्दोलन कहा जाता है।

चार्टर आन्दोलनकारियों का इश्तेहार

सूचना

जबकि, कुछ लोग जो खुद को इस शहर की नगर पालिका कहते हैं, ने हर इंग्लैण्डवासी के जन्मजात अधिकार को चुनौती देने का दुस्साहस किया है – यह अधिकार जिसके तहत नागरिक आपस में मिल सकते हैं, चर्चा कर सकते हैं, और रानी या संसद के सामने अपनी समस्याओं को लेकर दरख्वास्त कर सकते हैं।

जबकि, ये लोग संविधान में अंकित अधिकारों को रोकने की जुर्रत कर रहे हैं, जिन्हें रोकने का अधिकार रानी या संसद को भी नहीं है। अतः अब हम शहर के सारे निवासियों को सूचित करते हैं कि, यह उनका कर्त्तव्य है कि वे अपने संवैधानिक अधिकारों की रक्षा के लिए मिलें और इस नगर पालिका को दिखा दें कि उनके इस दुस्साहस को इंग्लैण्ड के सारे अच्छे नागरिक धिक्कारते हैं।

ईश्वर जनता को सलामत रखे।

पुनश्चः हर रोज़ शाम को साढ़े छह बजे चौथी गली में सभा हुआ करेगी।

अभी तुमने जिन दो इश्तेहारों को पढ़ा वे दोनों उसी दौर में इंग्लैण्ड के एक छोटे-से शहर न्यू कासल में लगाए गए थे।

आज हर वयस्क, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, अमीर हो या गरीब, विद्वान हो या अँगूठा टेक, मालकिन हो या नौकरानी, सबको वोट देने का अधिकार है। और सभी संसद के लिए होने वाले चुनाव में समान रूप से भाग लेते हैं। यह बात आज हमें बहुत सामान्य लगती है। लेकिन यह अधिकार पाने के लिए दुनिया भर के लोगों ने कड़ा संघर्ष किया। इस दौरान उन्हें घोर अपमान और तकलीफें सहनी पड़ीं। चकमक

तुम्हें क्या लगता है – क्या वोट देने का अधिकार मिलने से मज़दूरों की समस्याएँ सुलझ गई होंगी?

क्या पढ़े-लिखे और अनपढ़ लोगों को समान रूप से वोट देने का अधिकार होना चाहिए?

अपनी राय तुम हमें ***चकमक*** के पते पर भेज सकते हो। चुनिन्दा पत्रों को मिलेगा एक बहुत ही आकर्षक ईनाम।